

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीभरिष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसम्वादे
॥ श्रीशालिग्रामस्तोत्रम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीशालिग्रामस्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीशालिग्रामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभगरान् ऋषिः,
नारायणो देवता, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीशालिग्रामस्तोत्रमन्त्र जपे विनियोगः ॥

युधिष्ठिर उवाच

श्रीदेवदेव देवेश देवतार्चनमुत्तमम्।

तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि ब्रूहि मे पुरुषोत्तम ॥ 1 ॥

श्रीभगरानुवाच

गङ्गा चोत्तरे तीरे गिरिराजस्य दक्षिणे।

दशयोजनरिस्तीर्णा महाक्लेत्र रसुक्करा ॥ 2 ॥

शालिग्रामो भवेद्देवो देवी द्वारारती भवेत्।

उभयोस्सङ्गमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशयः ॥ 3 ॥

शालिग्रामशिला यत्र यत्र द्वारारती शिला।

उभयोस्सङ्गमो यत्र मुक्तिस्तत्र न संशयः ॥ 4 ॥

आजन्मकृत पापानां प्रायश्चित्तं य इच्छति।

शालिग्रामशिलारारि पापहारि नमोऽस्तु ते ॥ 5 ॥

अकालमृत्युहरणं सर्वर्याधिरिनाशनम्।

विष्णोः पादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥ 6 ॥

শঙ্খমধ্যে স্থিতং তোযং ভ্রামিতং কেশরোপরি।
অঙ্গলগ্নং মনুষ্যাণাং ব্রহ্মহত্যাদিকং দহেৎ ॥ 7 ॥

স্নানোদকং পিবেন্নিত্যং চক্রাঙ্কিত শিলোদ্ভরম্।
প্রক্ষাল্য ইতি তত্তোযং ব্রহ্মহত্যাং র্যপোহতি ॥ 8 ॥

অগ্নিষ্টোমসহস্রাণি রাজপেযশতানি চ।
সম্যক্ ফলমরাপ্নোতি রিষেণৈর্নৈরৈদ্য ভক্ষণাৎ ॥ 9 ॥

নৈরৈদ্যযুক্তাং তুলসীং চ মিশ্রিতাং
রিষেষতঃ পাদজলেন রিষেণাঃ।
যোহস্নাতি নিত্যং পুরতো মুরারেঃ
প্রাপ্নোতি যজ্ঞায়ুত কোটিপুণ্যম্ ॥ 10 ॥

খণ্ডিতা স্ফুটিতা ভিন্না অগ্নিদগ্নাস্তথৈর চ।
শালিগ্রামশিলা যত্র তত্র দোষো ন রিদ্যতে ॥ 11 ॥

ন মন্ত্রঃ পূজনং নৈর ন তীর্থং ন চ ভারনা।
ন স্তুতির্নোপচারশ্চ শালিগ্রাম শিলার্চনে ॥ 12 ॥

ব্রহ্মহত্যাদিকং পাপং মনোরাক্ষায় সংভরম্।
শীঘ্রং নশ্যতি তৎসর্বং শালিগ্রাম শিলার্চনাৎ ॥ 13 ॥

নানার্বর্ণমযং চৈর নানাভোগেন রেষ্টিতম্।
তথা ররপ্রসাদেন লক্ষ্মীকান্তং রদাম্যহম্ ॥ 14 ॥

নারায়ণোদ্ভরো দেবশ্চক্রমধ্যে চ কর্মণা।
তথা ররপ্রসাদেন লক্ষ্মীকান্তং রদাম্যহম্ ॥ 15 ॥

কৃষ্ণে শিলাতলে যত্র সূক্ষ্মং চক্রং চ দৃশ্যতে।
সৌভাগ্যং সন্ততিং ধত্তে সর্বসৌখ্যং দদাতি চ ॥ 16 ॥

রাসুদেরস্য চিহ্নানি দৃষ্টরা পাপৈঃ প্রমুচ্যতে।
শ্রীধরস্সুকরে রামে হরিদ্বর্ণস্ত দৃশ্যতে ॥ 17 ॥

রারাহ রূপিণং দেবং কূর্মাসৈরপি চিহ্নিতম্।
গোপদং তত্র দৃশ্যত রারাহং রামনং তথা ॥ 18 ॥

পীতবর্ণস্ত দেবানাং রক্তবর্ণং ভয়ারহম্।
নারসিংহো ভরেদেবো মোক্ষদং চ প্রকীর্তিতম্ ॥ 19 ॥

শঙ্খচক্রগদাকূর্মাঃ শঙ্খো যত্র প্রদৃশ্যতে।
শঙ্খবর্ণস্য দেবানাং রামে দেবস্য লক্ষণম্ ॥ 20 ॥

দামোদরং তথা স্কুলং মধ্যচক্রং প্রতিষ্ঠিতম্।
পূর্ণদ্বারেণ সঙ্কীর্ণা পীতরেখা চ দৃশ্যতে ॥ 21 ॥

ছত্রাকারে ভরেদ্রাজ্যং রতুলে চ মহাপ্রিয়ঃ।
চপটে চ মহাদুঃখং শূলাগ্রে তু বণং ধ্রুৱম্ ॥ 22 ॥

ললাটে শেষভোগস্ত শিরোপরি সুকাঞ্চনম্।
চক্রকাঞ্চনবর্ণানাং রামদেবস্য লক্ষণম্ ॥ 23 ॥

রামপার্শ্বের চ বৈ চক্রে কৃষ্ণবর্ণস্ত পিঙ্গলম্।
লক্ষ্মীনৃসিংহ দেবানাং পৃথিব্বর্ণস্ত দৃশ্যতে ॥ 24 ॥

লম্বোষ্ঠে চ দরিদ্রং স্যাৎপিঙ্গলে হানিরের চ।
লগ্নচক্রে ভরেদ্র্যাধির্বিদারে মরণং ধ্রুৱম্ ॥ 25 ॥

পাদোদকং চ নির্মাল্যং মস্তকে ধারযেৎসদা।
রিষণদৃষ্টং ভক্ষিতর্যং তুলসীদলমিশ্রিতম্ ॥ 26 ॥

কল্পকোটি সহস্রাণি বৈকুণ্ঠে রসতে সদা।
শালিগ্রাম শিলাবিন্দুর্হত্যাকোটি বিনাশনঃ ॥ 27 ॥

तस्मात्संपूजयेत् ध्यात्वा पूजितं चापि सर्वदा।
शालिग्रामशिला स्तोत्रं यः पठेत् द्विजोत्तमः ॥ 28 ॥

स गच्छेत्परमं स्थानं यत्र लोकेश्वरो हरिः।
सर्वपाप विनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ 29 ॥

दशरतारो देवानां पृथग्बर्णस्तु दृश्यते।
ऋषितं लभते राज्यं विष्णुपूजामनुक्रमात् ॥ 30 ॥

कोट्यो हि ब्रह्महत्यानामगम्यागम्यकोटयः।
तास्सर्वा नाशमायांति विष्णुनैरेद्य भङ्गनात् ॥ 31 ॥

विषेणः पादोदकं पीत्वा कोटिजन्माघनाशनम्।
तस्मादष्टगुणं पापं भूमौ विन्दुनिपातनात् ॥ 32 ॥

॥ इति श्रीशालिग्रामस्तोत्रं समाप्तम् ॥